

**THE INSTITUTE FOR
ADVANCED STUDIES
OF WORLD RELIGIONS**

**FILM—STRIP NO.
MBB—1972—70—29**

**BUDDHIST SANSKRIT
MANUSCRIPTS**

MAR-1972-70

1. Film strip number

13
2. Source

UPASAMPADAVIHARI

3. Title

4. Additional title, shortened forms of title etc.

N.S. + 800 = A.D.

5. Year in which MS was copied
(Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of scribe

NEPALI PAPER

7. Material (Palm leaf, etc.)

ANCIENT NEWARI
8. Script

20 cm x 8 cm

9. Size

5
10. Lines to a page

65

11. Number of leaves in complete work

1, 2, 8, 22, 23, 45-58.
12. Missing leaves13. Author and Date of composition
(if given)x
14. Number of Chapters

15. Remarks

Rules and Disciplines for monks.

Nov. 13, 1972
Date Photographed

न ह्यसक च रिक्ते ॥ उपायं चाचरन् ॥ स्वस्वयमनं गिरी वरमधिष्ठापयन् ॥ पार्श्वं चापदल्यमानमधिकं पश्य
निगमिन् ॥ मया नमित्यनवचक्रं योऽन
कात्रक सच सनमन्नहययन् ॥ मृगुत्त
मीत्यनमृक्तासमन्नमिषदगिरीचायप
त्यनिष्ठ ॥ अमीगिसवक्रय ॥ उपासम्यदं
पृष्टं ॥ उपासम्यदमपन्नयन् ॥ अयो वदयमान कन्नमिगो ॥ अर्धं नावकुर्वन् लनेन त्साध ॥ पुनवत्वे

वे ॥ अयकमिगददेत्या ॥ अथ न हानु ह्यसकममं कम्
मिगिन्नस्य नृणां यान् ॥ गिष्टमाहोदग आगमिष्य
विगुद्धिनिर्वस्यकिमागच्छति आगमनं यष्टुग ॥ सव
कम्पकात्रका सचयन् ॥ हययित्वा मयमा कयोधिकं
अर्धं नावकुर्वन् लनेन त्साध ॥ पुनवत्वे

महात्रयसुखादकफाष्टविसर्जनं॥ शायविवात्रविवात्रेयाहिवन्दनम्॥ अकान्तयस्मभ्यासयथा
काविवात्रगात्रमर्त॥ यागुर्विवत्रकर्म
हृष्टिगमयनिनिःसृष्टमीवमोक्षक
काममोक्षसंघस्यदेषुलिधिकर्मन
कसमानायामूलमानायावरुत्सावि
कर्म॥ नानदक्षवर्षउपसंयदायाधायनिजिगृह्यार्थक॥ नासमन्वितः कनविदनकनस्वः
त्वानि विना

नस्यात्र व्यवहाराः ॥ अत्राग्राह्यं स्यात् ॥ स मयं यच्छेत् ॥ स मयं यच्छेत् ॥ स मयं यच्छेत् ॥
 दीर्घयाधिकं कुरु ॥ जगुः स्यात् ॥ स्यात् ॥ स्यात् ॥
 निष्ठया नावाच्यं ॥ यगं नैषा वस्यानि ॥
 यः सीलसामान्यगमेनावागता न युञ्जते ॥
 यावथाजनात्वेष्टाने ॥ सयन्मा ननाम ॥
 न ॥ सायायाखीनच सन्यादने ॥ उदसम्यदविधिः ॥

स मयं यच्छेत् ॥ स मयं यच्छेत् ॥ स मयं यच्छेत् ॥
 मास ४ यत्र ४ ॥ न मा १ ॥ सावा ४ ॥ न दनमन्यामातनय ॥
 स मयं यच्छेत् ॥ स मयं यच्छेत् ॥ स मयं यच्छेत् ॥
 न ॥ याधिकं स मयं यच्छेत् ॥ विनीतं स मयं यच्छेत् ॥
 नोप्यागसमाकृतं विहृतं स मयं यच्छेत् ॥ आदयं नियुञ्जते ॥
 २ ॥ नानवलोक्तं निष्ठया निष्ठितं ४ कवरीयं कुर्यात् ॥

समाधागन॥ ग्लनायल्लनकीकस्यपनिविनादनदसिगगपुगिति॥ सभननगिगिल्लनपनील
नानीकावसकावससामर्य॥ पाइरुवा
॥ गदसपयपुगिवलत्वमुधिहोलवि
वसध्वावाभयचिनयपागिसार्द्रत्व॥ ७
यल्लविमृकिगल्लनदहनि॥ सात्रचवी
हिनेत्व॥ लोकरुत्व॥ अहीकरुवा॥ उयल्लिपुक्कपुगयल्लिपुगिक्कयाधनल्लिरुत्व॥ अकनायिकानाकनायि

दयकेकसलीलवकावादधय॥ पिठकारिरुत्व
रुपुह्मिहिरुगु॥ पुगिवलत्वस्वाहिरुगु॥ यो॥ य
चोलीलहगल्यागयल्लसम्यन्नत्व॥ लीलसमाधि ४
यल्लिपुक्कवक॥ स्मृगिसत्व॥ पुगिसलीनत्व॥ लना

यकं सफा रुचा नयन ॥ नाना नाविगंदन दामसयसंध यवाजयन ॥ यकं पुवका यकस्य संधन
रुका दोन ॥ रुक न हागरेमिमा नायिगु
नयुं रुक ॥ मागग्लान्ती किं रुकुमिवा
रुकाया कयुषिदिनाग ॥ नाना सयथा रुषध
यभुकः ॥ यकं विधुसम्य ॥ जालायक योस
नाशन ॥ रुयसं वासिक ॥ जातुगं रुगगाविः
महः ॥ यलन रुगगाथा नकुं ॥ गीधिवर्को नकः ॥ समा रुदं पुवका सगदृकिनिद्रिध दशावर्गन धन नगश

रुमि मकु मुकु ॥ रुन रुषक ॥ मासिग्रीन रुयुयसंका
॥ विष्णु वगं उयसं यादका ॥ नाना नयवाजय यवा ॥
मनगिवा ॥ नाशन मर्वी विधस्यति निर्दिन ॥ निर्मि नः
रुयादजीविषा थाय कू न रुगि ॥ रुगस्य गदावरुकी
धनयसम्य दायन रुनीवादिगीयायां संधन सा र्वक
धन नगश

यदकायनिर्मुक्तं कर्मसंघातमन्यतः ॥ उपाध्यायश्चैव न ॥ कर्तुं त्वैव कर्मादानस्य ॥ यत्रिषूक्तस्यः
 पश्चद्वर्गवर्षासीति प्रवृत्ता मूयसकां
 फवर्षं प्रवृत्ता मूयसकां ॥ नैकगुणं प्रम
 प्रवृत्ता या पुनितुक्तातिनिकमयसं
 र्पयसं ॥ नासौ नमादि आन ॥ उपसंघा
 कस्य विर्किश्चिदयसं लोसायते नन्वा ॥ जीवक यित्क मननत्रहानताम्याम इनद मं प्रवृत्ता

पृच्छन् ॥ नाना समसंकाकादाय न समखं वास
 (ॐ) दमे मयस्य ययन ॥ अत्र विदुः दने कध
 पादयन् ॥ उनरश्च दने स्यामय निमित्त्यथम
 यदप्रययैव भावलादादाय ॥ कृद्दस ॥ वृत्ति
 जं

पूर्वदयादियुक्ताः पुनिक्रियासं दधीष्णायासादिकस्युक्ताय त्रिभुद्धेयसंयदा ॥ आत्मा नासत्यना
 मावेसंवेद्य नयुहानन ॥ संग्रह्यगर्भसमा
 दधकं ॥ कथोनाधजवचकः नत्रथकावच
 नादयः दानिदकधदत्रिकधदत्रिक
 धकाः दधधिवदधिनानासाधुनाधिविः
 अधककागमधमकधकनकाधयनम
 नाकधुहाह्यानिविर्जलाः कावाकावधुयाकाधुकाकाअनककाग ॥ यस्मिन्नासाअधनासागमधमका

[illegible]

नः सादमननं कं अकृम नदावीधधस्यस्य ॥ मागुवाकं ॥ पिगुद्यानकः अरुद्यानकः संपदशदकः नथा
 गनस्यानिककवृत्तिगनधिवार्यादकः
 नमासापनिमायन्नन ॥ नानस्यययभानि
 दययुवी ॥ अवसादसमुपसयोदधनं
 धर्मा ॥ अदलनाका मृवायनयायभिरिक
 नासुकाः अविशार्कः अनिवृत्तानिवातका
 गलगलमुकवधिवार्या ॥ ० स्यादवश्रीयदी ॥ श्रीदिनानावधिना ॥ अथयनना ॥ नालमुकाः ककदिना

शिकुलीदुसुकः चरुनीया नाजिकानामन्यनमान्य
 मिरुविषयययनिदिना नयवाजथषुदयसया
 इयसयद्यानस्यययनः स्याधन्नामशीपूनः यलि
 दसदिनाः याददिनाः अरुताकशदसुकाः अ
 ॥ १२ ॥ कागुलिकः काधः कनिक काधवामनः
 ॥ १३ ॥ कागुलिकः काधः कनिक काधवामनः

३

दवस्य ॥ कवर्षे स्नात ॥ लिकाया ॥ ४ ॥ सुकफास्तवस्या कानन ॥ उदकचमस्य भाद्र ॥ १ ॥ स्यात्कनिकाया ॥ ४ ॥ धुन
 ॥ १ ॥ शोभस्वागावत् ॥ १ ॥ नखना राधे ॥
 वया ॥ ४ ॥ अग्निना छुक् ॥ ४ ॥ चर्न ॥ नकच्छि
 संलावकादकाचीववा सिया रुचि ॥ ४ ॥
 स्नात ॥ ४ ॥ कनया धर्न ॥ ४ ॥ पगि सवर्ग ॥ ४ ॥
 स्यात्कवि ॥ ४ ॥ तस्य समुद्रा रुग्णा गायनस्य
 चीनामय विनिवर्णन ॥ ४ ॥ अजयदकद ॥ ४ ॥ पछायन ॥ ४ ॥
 कात्रकवादा रु ॥ ४ ॥ उदकाया मय ॥ ४ ॥ समायाजन ॥ ४ ॥ गद ॥ ४ ॥

कार्यं ॥ धर्मं त्यादास्यामन्यं ॥ निदलनमंगलिसु ॥ ६० ॥
 न ॥ कनविद्यामसि बलव ॥ रिद्रध्वपृषक ॥ नानयगम
 वेयग कायधावेन ॥ अता वमद रुमक रुकनस्त्रि
 क ॥ केव ॥ कस्य कवसमका के वसा धू ॥ वहि १ संवृणः
 मोशोमध ॥ जालवागयन कवाटिका वक्रिका घटिका म
 वा प्रकावादा रुडकट कायामपट समायाजन ॥ गयडल

सनासकाः च वसुक वना साधु कना सा अनासकाः दसिजा ना अ ध जा ना रा ॥ धम क रू जा न काः च वसुक
नरा अ ध क जा अ म ऊ ज का ॥ दसि द नाः
ध क द ना अ द न का ॥ अ गि यी वा अः
ज का ॥ अ य न रु का ॥ अ गि दी यी अ गि ज
॥ स ता वि के रू का स ध न व वि धी ना स यि
न मू य रु य थ व ॥ य रु क ने क से का या ध
स म य नी य व स र्वा सी वी क व म स्य ॥ स सा य या थ र्श न च रु रा इ रू म व ध कः क ध न वी व थ म ॥ न न

[illegible][illegible]

स्यपनाखमस्य कदया लब्धकयागमा ला कवती ॥ अग्नि कान्तस्य नरु माविष्ट काल वदान ॥ अग्निवासाय स
वेरु नं ॥ गदखमाय स मिह ज धात्र लं ॥ क
स क नी ॥ कद्रक नील मुद्रि गाना म र्नेयः
क्रियव लय मि विधानं ॥ आमल पिपि लुफ
वीय लि ॥ क नाय लन न म न न वा ॥ क लु य
त्या ॥ स्यप न म र धि वा वि क भ गु फ ॥ नि

॥ ला वा रु द च क व लं ॥ अना भा य स्र य य वी व व ल मि ह का व व द ग र क व लं ॥ उद क ज म स्या स्य मा क ॥ मि ह

लस्य ग्ला व क मा य व द क या त्रे ह व लं ॥ म मि काल त्व ल य
न य ॥ दी गे धा नि वि व रु य धू य दानं ॥ वि क स वि लि क य
या य ॥ क रू पि लु का ज स नं ॥ रु ले रु म वा रु व ल मा क द
ना ख मा य स द वि का क व लं ॥ मि ह ला य नि व ध स ग क ल
मा दि न र्ने य व ल य म स्या म मि व ल य क व लं ॥ अना न ग र

॥ उद क ज म स्या स्य मा क ॥ मि ह

यत्र पाद धावनिका ॥ उपविष्टा तस्य पूर्वदक्षि ॥ एका ॥ कर्मा कर्णि धनं ॥ उदयस्तु यथ ॥ कठिं प्रम नर्थ ॥
दक्षि यदव धं ॥ कर्कि काव नं ॥ म ॥ धल
यन मवा म् न्धस्य ॥ ग ल काप नि सा धि का
दिय गुय द ॥ वि द्य व क र्था रु स्या मा र्जन
॥ म म थ न म् द वा ॥ न वि द्य न्ध न्ध न्ध न्ध
यत्र यम या द थ य वी ॥ नान ना धि क न या
न ॥ य न्ध न्ध ल य रु ॥ धि द्वा न्ध य न्ध ना ग ध क र्था दिस म्भू य्थ न्ध न्ध न्ध न्ध ना र्था ॥ न कि रु ल्धु धि शि

४६६॥ स्वाविगयन ॥ स हंति कावर्जन ॥ आर्यकृष्ण जवन वलम्वन ॥ विदलु कयानमन ॥ नेकवीववः
यदिकर्मकृष्ण ॥ नेककायस्याध्वन
॥ नसिंदसमः ॥ गहनसममयनिष्ठग
॥ माहयिरुग्ना ॥ अविदिकानयि ॥ मनस
खलाननकदाख्य ॥ अर्यकृष्ण जल ॥
द्विगहनदविदिकान ॥ मायादयाधालिका
क ॥ यीवायावागगल्लुयधनिर्का ॥ नयदकवनयाधोयकालयन ॥ मूनमस्ययनाडीमर्थ ॥ कालः

कात्रयन ॥ अनिल्वर्ययुवनवधधालिर्मादिना
॥ यत्रमदः ॥ आलावस्यावाथाया ॥ आयावयनिष्ठग
॥ आवकसदध ॥ वानददम ॥ तगल्लुयगैयसाहलके
॥ यल्लानकेभायगरीगस्य ॥ यूवीखमस्यदकृष्ण
॥ धात्रयदनीगहन ॥ दद्याइययस्याः ॥ यिधान ॥

हानयत्रिगणथान्नथनभनहिरुःवकावकस्यावधक॥लगामयस्य॥वक्रवा॥लिकस्यगहनयमृया॥स
गद्विधधधनस्य॥लम्बनमस्यकान्ताः
नथनः॥यनिक्रियंस्त्विकासंनथन
थकस्त्विकासपादरेखककासाहता
कान्तानिश्रुमययुञ्जन्॥अविस्मिता
मध्य॥सुनायास्यान्त्रान्नकाकययक
जिह्वववाववम्॥नयनिसंस्त्ववक्षस्यमयमक्रन्॥अन्ननिक्षयवस्वर्न॥यनिरुधययद॥उय

विकायावक्रसाधः॥ननुभोस्त्वयर्न॥नेनमस्यद
॥नदस्त्वन॥कक्रयास्यनयनमालयनकयद्व॥युः
निस्त्वयर्थन॥अत्रथयनः॥नन्त्रालम्बालयनः
नान्वदः॥अनिष्टः॥संकायासंयहयनमनयनः
यान्॥वक्रनिवयोर्नयालयन॥त्वयमिवसंघादा
॥उय

कुकनीयसाधनयम्॥ नृपुमस्तुतकस्यानयागानिखाद्यनर्न॥ वाधिवठयगुकस्यायाधिनलकस्यावा॥ य
त्रीमाननगव्य॥ एवदिंसगन्धयावीनेन
वात्रिकाव्यवग॥ यत्र नसहयजयाक्या
एवथया॥ यातयायविरुक्तीन॥ ना
त्रयग॥ नवावस॥ नयसुमेरुध॥ द्यकंद
नसवान्नकेनव्यकृता॥ नान्याद्युनि
यम्॥ नाहुयेयव॥ नयदन्कवन॥ नसिन्त्रिक्रियम्॥ मोलकस्यानरुद्वर्तकवर्त्त॥ गदिष्टुनावि

[illegible][illegible]

सुययन्तीघः॥कस्मीनरुलिकाम॥दिउस्येनयसाधकउऊरुसिधयसासे॥साधयटिकाकीलिकाः
थिगुलिकामकयनिकाशिः॥वर्कानिया
सासादनननविक्कनवा॥उरुयान्त
सुतन॥४३मुदामुननयसा॥मुक्षमा
वर्क॥४४दिदकसुक्रिउवनकायाक
वमयस्यचन॥गन्धायरु॥कथयक
घाटरुदकन॥४५वसमसा॥गनावच्छदनमयालयिधूम॥यनरुखमल्लिकावदिलयन॥यि

व॥सादस्ययखाससा॥गहनचुष्टिनासिथसादुः
वगुस्थरऊनमृगान्नलियापाकसमसा॥घुमि
नलपाकनमासखटका॥मार्ककन्यकस्य॥
बालस्यसंयाकद्व॥यवनमसा॥कथयकस्यगद
स्यवा॥रुस्यनः॥यवसिन्दासाधरुदन॥साधरुदन

॥यवीश्वर्याय॥युगपिरुसंजयान्निवधनं॥नरुवायधायनिधिगल्वन॥स्यदगुदलमस्यगद॥निन
धकुनासम्यलित्ररुयात्रारुनिधयध
वुलिः॥ननेवगन॥निनननरुहृयाधायः
नरुः॥सुनधवासीकाहथन्यसुदं॥यक
रु॥ननिः॥धिनमवसादनदनावसादस
मिखनसंरुठः॥यानवः॥कठालयकस
गंभीयस्यधववमानादिनेस्ययायमिदस्यव॥अवसादीनसंगदन्यस्यरुताययः॥अनारुनीरुका

संकात्रलम॥मनियानावभोषधायनारिमननव
मासंनम॥क॥विदिवसननिधिगमयसंकाभलद्विया
धनधादिः॥काठाय॥क॥यसधदरुवीथसुयाजन
न॥य॥वमानाः॥अनालाथानववायउयसुनधमा
मेरुदा॥निधखयनियमसुल॥अठधस्यगददव
अवसादीनसंगदन्यस्यरुताययः॥अनारुनीरुका

नयदनिष्ठया हाव रुद धारव धमा हा मय दय ग छ द्वा ॥ ना घ ग नि म न्न व रु य वी प य न्ना शार्द्ध मा स द य या
न ॥ व रु क क मी य स्य य क य नि हा व स नी य
ह न ॥ ना न व ला क न जा नी य य त्रि क र्म
निष्ठया द स्या निष्ठि न स्या वा स ॥ आय क
कादि नी ख रु नी य क्रि वा निष्ठय गृ क्तान्
न ॥ नि धारव म ना यु शु ग न स्य क र्मा याने
खं हा न य वि वा शान् न या द क र्म य न्या दि ना स्य ग द र्म म न्न व व ग ॥ पु धी धा रा म्नी या ति त्या म रो य द न तो

नी छ य ॥ द द व म य हा व छ न ॥ हा व य य निष्ठया
य रु वी ने म्ना ने ॥ नि धी ख र्म हा व य व रु य य ख हा स्य
ना न निष्ठाना न ॥ अ र्द्ध र्म व हा र ॥ विष्ठ ग्म ग ॥ न
॥ ने का द स्या खे ॥ अ न्य म मा वि स्थ निष्ठि न स्या यु छ
य न ग या ग ना ॥ न य स्य व स्या नि का ग ॥ ति स्त्री य व

नीयकसंज्ञावर्त्तं॥ जिह्ममस्यान्वलिथुग॥ उयस्ययथकिह्मनिलकथनिका॥ सवीदया॥ कलागपाधदककावः
विदलस्यत्रमस्यागीकूनायेष्टुकि॥
यंरुन्मास॥ नायकल्यदिग्वसूषमलनः
त्रयग॥ नाविषयः॥ निदत्रनभगत॥ उ
व॥ निर्मादनस्यागयिसंयलिब्रवाहकः
नादकग॥ अथनिष्ठिगयनियग॥ अ
ब्रवाहकदकककावयनायन॥ मयोनसमवलाकवीवन॥ पियस्थेनामलेनमनसिकवर्ध॥ यः

इयं गी क व क्षय यथा मरिह स्यात्कृतिमिह स्यात्कृमर्धं कृमयम् ॥ नानदमवसादयत् ॥ नदस्य न कृममग ॥
नानदस्य कृममग ॥ निष्कामनमकत्र ही
इकवक्त्रममही न स्यात् ॥ उय मयम् ॥ यः
निष्कामरुवग ॥ न विद्या क स चरि न कि
मर्जय न द न काह ॥ एति ह न ॥ उ स्य
हम स्या द्वा दश काय कृ ही नीय ह स्या ह का
त्व विमर्जन स्यात्तय न काठि ल क क्षाय नि ॥ ना सम्यक् वि न द र्श क ॥ य ह द मू थ ॥ य स्या म न क स्या द्वा वं जा

य ना र्थ ल य ना न ॥ य वि धा व ने क मि क द म्वा मा न क
कृ ह न्य क य नि र्का ना न ॥ उय स म्प न स्य व ॥ न सिद्ध
या का न क वा न न ॥ य नि ह द्वा ना य र्थ वि ल मा स्य स्या ॥ वि
मा व कि र्था य ॥ ना य र्था म्प न क व कृ स्या क य स्या वा ॥ य मा
न ॥ आ वी र्क र्का ना ना द र्श व व म्प मि र्का ल ॥ ना य क

१४

क न सं वा ध य न ॥ अ न्व र ग न ॥ ना गि व ल ॥ ना न्य न वि भ न् ॥ अ नि ॥ स य ज्ञ न न प वि ष्णु त्रि ष्टा स च स र्व व द न ॥ १ ॥
स कृ यो द न ॥ अ ली य न ॥ न ग वि च र ॥ अ प
य स न ॥ की मा न स न व ॥ म प गी ॥ अ नी च
यी ॥ वि कि य मा य श मा न नि वा न य न ॥ अ वृ
ध या र य य न ॥ या प मि णा वा न ॥ क ष ल
नि ऊ के वि ग य वि ष्णु न म न्य लो वा धा ग ॥ २ ॥
स मा ना वा यी त य क स ल य क स न् ॥ क स थ म क न न म य नि ष्णु न ॥ य र्व कि य र व ड र ॥ ३ ॥ अ न वा र य स्या य न

निर्माद नै॥ यिष्टुयानिक ३५५ दाव क स्य च॥ सयु याऊ नैथ न॥ यत्रिआव तस्यायि॥ सायिचत्य ३४॥ सायं चद रिचि
नै॥ नैव स ह्यव ३४॥ विषमादीय प्रगागरि ३४॥
गत्रस्थापनागर्न॥ माणासीमवेकस्याग॥
॥ स्वायनमस्य॥ ये स्यारिच न नाया भाषा द्रका
यनै॥ यमिनिवसनाय ह॥ निवस न गृह ह॥
अममृखानकात्रक त्वन गृही गसम्माऊ नौक
त्वन॥ क ल्य कीक वल्ल ल्य स त्रिमा यादन पुष्प क ला चय द क का षायरी ला नाय यिष्ट वैम ला द ३४॥ अक उका का टनी नाय

युष्टी गस्य रस्मि परिहसन नै॥ असह चदा गल्यापदल नै॥ वत्र
उदक स्वन कय प्रलं॥ काना वाव नै॥ रुक् माणादि निर्मादन
दकायुयनय ३४॥ यादय शाल नगगा त्वस्व नै॥ भयनासन पद १३
पादादका विस्व न कठि ह्य वनासन नै॥ कयान त्याचन नै॥ अमः
हस्तान्मा मूर्क क्रय न॥ गृही गस चीक असम्प र्ग दी वत्र सवक

शुभं न॥ यन्न वा सुदयवसुयत्रिष्टु दस्यार॥ अत्र कार्यं नर्तनम्॥ कुगर्भं कृष्णनीलम् नदीव नालं धावनस्य॥
संप्रसादं हविर्नमो भयवर्गमः स्या
इति गत्वा गामा कृत्वा यवधाम् यज्ञानेया
वैकुण्ठं॥ याथावत् कदा न च गगनं स्यवसा
न॥ सन्निवृत्तं जयां वसिष्ठाय सवैश्वर्यम्॥ इ
मे मे कृत्वा न॥ अयुनिवधेन न केवलं कार्यं
विद्यानां नैव शिवं हि सुदृष्टं ह्यनियुक्तं न च॥ आगच्छ कृष्णाय वत्सवांसि काना मा नो वयं ह्यनारव॥

गृहीता ॥ सा कृष्णको निःशिर्गयनयवालिः ॥ यवजिनवदगया न च वनिर्ग ॥ नृग्नर्न सवक्रवात्रिधसध
यकवन ॥ उयम्भयकमस्यारावददीवना
राहाः ॥ अस्तुत्वननदुष्टयकसमादायय
दगना ॥ यानक द्वात्रायधुदिका नान
दश न्ममाद्यामारुस्यमनामृत्तोसुनिवि
मीवाहीति तामयन ॥ नाध्वन्युययावि
सीधिका दनमसोमत्रमभाही ॥ यीभयनासनाद्रस्थयोकृति कनिवधायन ॥ अस्तुत्वननसयनयुर्वकामो

क्रियात् ॥ गमनाद्यर्थरुचक्रियात् ॥ अना नानि यथाः स्यात् ॥ नयत्रः यथा स माग रुच ॥ ननिष्ठ
 न ॥ उक्ताय मया यथा ॥ नाने वा धेसु
 मायत् ॥ उच्यते धामिकं तो रयमिष्ट क्रिया
 यवक्रः ॥ धामिगुदियः कथं क्रियात् ॥
 मित्राय यद्यदनेष्ट तानिय क्रियात् ॥ सर्व
 क्षत्रगः ॥ यदि स्वागमयत् क्रियात् ॥ लायकि
 रुचि ॥ रुचि वद स्या मस्य कथं क्रियात् ॥ अना धरु न्यदुगीमा नितक ॥ सर्वनीय यथा क्रियावदय

गमिकादिष्ठातावासाभयनासर्नसदाकाध्वगता ननयद्यि त्वेन मा तयि त्वाय काम उ॥ सर्वयत्नान्या कस्यदी
न॥ कविन्यमधिगमि ह्यथ यो दु नमन्या
थन॥ कर्तृशायगगानसर्व४सर्वाने॥ सजा
नादिकत्रधीयसम्यायनना नगुद्गीन॥ व
संस्कात्रयन॥ सक्तुव गा इद्य सादयन॥ य
नागुगुगुगुगु॥ ह्यु ह्यु त्वेन गागुगुगुगुगुगु
धर्माभय४ कर्थां दु त्वेन द्वाकां संविचनय नितुया न॥ सर्वयत्नान्या कस्यदी
न॥ कविन्यमधिगमि ह्यथ यो दु नमन्या
थन॥ कर्तृशायगगानसर्व४सर्वाने॥ सजा
नादिकत्रधीयसम्यायनना नगुद्गीन॥ व
संस्कात्रयन॥ सक्तुव गा इद्य सादयन॥ य
नागुगुगुगुगु॥ ह्यु ह्यु त्वेन गागुगुगुगुगुगुगु
धर्माभय४ कर्थां दु त्वेन द्वाकां संविचनय नितुया न॥ सर्वयत्नान्या कस्यदी

अथ ग॥ अन्वद्वन्द्वमन्त्राकम् ॥ १००॥ कान्तयमिष्टय
 नीम॥ अथ शाययसोऽहम् ॥ अथिष्टय कलाय गन्तव्यं विष्णु
 अथ ग॥ अन्वद्वन्द्वमन्त्राकम् ॥ १००॥ कान्तयमिष्टय
 नीम॥ अथ शाययसोऽहम् ॥ अथिष्टय कलाय गन्तव्यं विष्णु
 अथ ग॥ अन्वद्वन्द्वमन्त्राकम् ॥ १००॥ कान्तयमिष्टय
 नीम॥ अथ शाययसोऽहम् ॥ अथिष्टय कलाय गन्तव्यं विष्णु

कृष्णकविप्रियकृत ॥ भिक्कुमानोर्त्तनामस्तु यामयत्रमैधर्व ॥ निःशिमशामव ॥ अमस्तुवि का त्वशिक्ष ॥ धीत्वया
ननुवातावर्षद्वयचत्रहस्तकाल ॥ श्रद्ध
हामयसम्यपुटजायमादिः ॥ अद्योनम
याविगार्थ ॥ यत्कृत्वमवद्वष्ट ॥ निष्ठयव
न ॥ यमनायधमनेकत्रकान्ननाम ॥ कुम
ना ॥ सदायुसविता ॥ नमिहिकी ॥ निमिह
युवम्कवस्तुगगम् ॥ नामन्नधगगिकी ॥ नवकषा ॥ सद्यत्रम्यकृद्वर्ष ॥ नृनीयस्यैधर्विद्वक्षीय ॥

यानियासनमयस्य यथं ॥ सनमार्गं भयनासनयस्य नयानीयस्य नवावनेयकानि ॥ सर्गं नवक
४० श्रीग ॥ उद्यगश्चिह्नामयत्रिजनकि
खेनीधर्मासन्नाशुतयासंहायथं ॥ रु
हं ॥ अ० ४१ लक्ष्म्यनयद्रुमर्न ॥ नवयय
स्वर्यमदिकयागुरुर्नगश्च ॥ गश्च नः
हवाजयुगयादमुलिकायाभिदयित्वा
न ॥ सर्वयुवकायान् ॥ उद्यमस्ययन्यस्य नयायनाद्योक्तमकारुः ॥ अगावयेः मयः ॥ कखनेहि

या ॥ नवश्चयवायवाताय ॥ अस्मिन् यक्षोसमदि
गीयवाग्यवाग्नियानीयत्रिजनस्ययनिर्मलक
विगुस्त्रयया ॥ संधावसंयवः स्वस्वाकृष्टायथ
मनावाये सदसाकस्यविगुसामिगामायः
शुद्धिकार्यायुर्वदिनिदन्ता ॥ शिक्खीरिक्ख
न ॥ अगावयेः मयः ॥ कखनेहि

माहात्म्ये ॥ लक्षणं दत्तं विचार्य कथं वाच्यं नरकं नो रोकं कुरु ॥ यि ॥ सुखं लब्धं च नीमलपुगिष्टं नमः शक्तिं
 कादृशं यादनीलकं ॥ लक्षणं दत्तं विचार्य कथं वाच्यं नरकं नो रोकं कुरु ॥ यि ॥ सुखं लब्धं च नीमलपुगिष्टं नमः शक्तिं
 धिफाना ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ श्री नमः दत्तात्रेय
 धात्रे ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ नाम नमः गणेशाय
 नमः ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ नमः नमः नमः नमः ॥
 पादाङ्गुलीयं नमः नमः ॥ नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः ॥ नमः नमः नमः नमः ॥

नस्य॥नपुत्रवमथार्थसि॥३॥ध्वनीगुफमाससं॥अनयध्वयकनार्यागदतः॥अनयसम्यन्नधस्य॥नाज
नानस्यारिकुर्व॥नेनयस्यवक्राने॥नान
खिकध्वज॥नेनयक्रयिमयस्यतिनाय
सुनमाजुकमपुर्वयवगाया॥अयाकुया
सगायान॥नयजसाकुमिलीसि॥यान्वक
मस्यदस्यदिनादिना॥यायलकस्यरिव
गंदिनागुल्यक॥कवदिदिदुजवदसदिगातलुनियक॥अनकलकिमिलवियत्रिमिलिगहिककभीलि

नगाय त्वा त्वा न त्वं ॥ न गदु ॥ न मु क ॥ नाम न स्य ग गि कि ॥ ना वा धि ग त्वं ॥ न न द स ॥ न न दः सं रु या ॥ धि द्वा य त्वा
 वा कि व द्ध ध र्म स र्ग स र्ग ॥ वि न य मा रु का स्या
 धु र्क य धु र्क रि रु ला द्ध व क र्म य स र्ग सि र्गः
 न र्क मा रु घा न क र्म य रु घा न क म न र्क घा न
 क म ल भ य मा रु धि ॥ स व क र्म य रि रु ॥ सा
 स्या त्वा न वि धि ॥ ॥ पु वि रु स्या ल मि रु
 वा ॥ वि का यि ग व र्क ल ॥ अ प नि व र त्व द्वा सः ॥ अ रु स म म रु स धा गि क त्व र्थ स य धु क रु स व न स य मा न न

वा र्म मू या ध्या य मा ग वि र्क मा धा न य धु म र्म धि र्ग ॥ अ रु
 ना ना स म्वा सि क म र्ग वा सि र्क गी र्म र्ग नि धि का व का
 र्क स र्ग स र्ग र्क म धा ग म स्या नि क र्क द्धु दि व न धि न य द
 रु म वा स न वा स र्ग र्ग न व गि य स्या त्वा न व द्वा न नी ॥ य
 गो ॥ य र्ग वि क र्क ल स ॥ अ वि का यि ग ॥ म र्ग व र्ग म रु

नाखी॥ अशमनमको जाकसुहा॥ पूर्वमनगच्छदयदावगादीनिनिवृत्त्ययकमयवभगकासेलनयानकस्य॥
नाव॥ सुलकृत्यायकी कृदके॥ अनअभि
वथ॥ अत्रयठकारिकमक्षुगिआरु॥ नि
नयत्रकमीकषुसुस॥ यत्रननिवात्रहः
सदन॥ समिग्रदश॥ यत्रिकयससलिस
वाकृगययागलवत्रस्य॥ अस्ययागल॥ अना
लंरागुसगसदयल॥ नमूकनादीयागिकमर्ग॥ नदाव॥ नामकानेनागिकामय॥ नामवगिमीकमध

॥ गियनासासिगायीगी वाकवस्य॥ गगयाकिविग
शरिः स्वकर्माकस्यगदर्वशुधिकगत्रस्याकष्टकः
वा॥ तच्चिब्रभस्यगदखमयहकीभयगियद्वरानकनि
गमि॥ जायाविवादनवाजकनवग॥ यककनवनिः
भक्षमलचिक्कयविरुस्यलुत्कगगाशुधार्न॥ दान
नामकानेनागिकामय॥ नामवगिमीकमध

नमो मथ सादिः ॥ वर्यमिह सुविलम्बिका कारु ॥ वर्यमपि दृश्यमावकवदस्य ॥ मलत्र सायविष्णुगणदक ॥
यदभासायाय दृष्टुं नर्त्तकि नृणां का
श्चिन्नुदगम्य सायकासः अयमनव
कर्त्तव्यवः ॥ लक्ष्म्यकं न्यस्य निशामः ॥
सायसावनयाः अत्र शत्रुयियत्रकीयथा ॥
यसायान् नम्ययलुकायाम ॥ उदृष्टाः
विद्युदभाशः ॥ गदन्त्याकावर्त्तवदमरिर्मुदिर्गं यनाकविह सानसर्वदी सर्वमसुक्तावर्त्तव्यः ॥ अन्य

टिगर्त्तव्यं ॥ अदिगजयाह केचिन्निविकायितगा ॥ नमश्च
सन्व ॥ अदिग स्यमध्यागस्यव्यस्यसीदिगस्य ॥ यस्तु नह
कनदः ॥ अदिगसिद्धि नथस्य ॥ पुथककृत्तयाः कायाय ॥
वदसमायोजन ॥ अन्यस्यिद्धि नयिकायिद्धिदस्य ॥ स्यः
वाक्यसीम ॥ अत्र साय ॥ यसाविकायः ॥ अदिगसीकृतास्य
॥ अन्य

२१

न्यायथगुडवधिविवात्रिकस्यस्यदयद्वीसधमनयप्रतिगुसीगावनाथानयदसनं॥अत्रमरुस्यमित्तमिमम
विकाशामूर्यनिवत्तनं॥नानदहताहतानन
यत्रिशदमन्नहताऽनानकल्पनस्वीकृत्याम
मूल्यनत्र॥यक्यागवोवत्रस्यसुटनायिग
मकमधिमिश्रक॥नामन्नष्टाविष्टिगत्वेणव
यायविदानेयादोम्यस्युगि॥नाकृगाकृकी
हादकीवादकलामयमृदीयथासखकात्रहं॥धत्रक्षसुकामेसम्वसुनायदियतासम्यदिशा॥यमसुवत्त॥म

नरुयर्थयवग॥अदक्यादानयात्राज्यिकविरुधं॥नम
नस्वीकृत्यविमोचयग॥यत्रननेधर्मदहनया॥उप
दहं॥नमोमीकवनावाटकमस्यमित्तममदाउनपुम
दययायविग्रहनेपुष्टनाम्यगमहं॥मसम्वरुनिवत्त
याग॥नस्वयंम॥एकलयहा॥यमि॥मनमसदक
म

सद्यः नयनं ॥ आनन्दक कस्य च नैरिक्तं नयनं ॥ समं नयनं नयनं ॥ निवाहं नयनं ॥ आनन्दक कस्य
गायं ॥ विष्णु कस्य नयनं ॥ यद्यनमाया
त्वमयमिवादिनं ॥ निष्कषायगमो ॥ सर्व
त्वमिवादिनं ॥ अद्य नयनं ॥ नयनं ॥
उनायि ॥ दि. ल. ॥ यद्यनमाया ॥ अद्य विष्णु
विष्णु कस्य नयनं ॥ अद्य नयनं ॥ अद्य विष्णु
यद्यनमाया ॥ अद्य नयनं ॥ अद्य विष्णु

शान्तिरुस्य॥ सुना क ववनिदि कः॥ निष्पत्तिरुदरुदावधामददरु क वगधनं॥ ययतायधयेवसगभय
गत्रसवायवधि॥ यने क क्वादीधेनकाधिः
वा॥ यथागमयलायाया विनकायानि क्वाया
वननयध्वमीनः॥ यदस्मादेकयशमः
माकाधमा॥ शुक्लरुकी॥ निर्धवत्वमुदि
धध॥ नूनमयायादादावध॥ यधिवदयध
मगावनरुधिगत्वं॥ नाम्नाययुतावसावसा कुरुत्वं॥ नतिपादीकासी॥ नयसकुरु कुरु न कुरुवः॥ नमविग

त्वं॥ ययव क्वावनिनवाप्रवकः॥ अनादी॥ उयावन
ध॥ सानिष्ठयनसवः॥ निदिगानि क्वायसमदवः॥
कवत्वं॥ नाधनं सुवा यदमावनय॥ सुतक
नयन॥ अन्वसीमः॥ यदुरु मथाजन॥ मादाम्कवदय
अथावयनवन्मखकन्ठ॥ नानास्वक्याविरुपावय

दत्तादानयात्राजयिकद्रुपयागर्ग ॥ वाकाकमिचगुर्देमावका ॥ निदलनेयेकत्वं ॥ वगर्थसाकावायसागत
यशासाविं ॥ गियवत्वंगदा ॥ विर्य ॥ दानका
ककद्रुममत्यस्यमदत्वं ॥ नानात्वंनास्यः
नयुजाखजयी ॥ निदोखत्वं ॥ लखास्य ॥ विना
मुनकद्रो ॥ लकृवदगग ॥ गयकातिकसाध
सुसुत्वंनायशागः ॥ दायनेक्षमकायध
विगावदा ॥ दायाम ॥ यशाज ॥ दार्सनयुगनद्विज्जितत्वं ॥ वगददा ॥ वगस्यस्यान ॥ गत्वंलायाधदावक

इदमनुयस्य॥नेषश्चाजनः॥नदावयदमिसीदिर्गममखत्वादनरिसीदिगसायकमः॥सु.रीयाधकु.मी.गगस्यग
दिगीववसुयामन्यदाव॥सयनियदाय
रुभयः॥खासानूपयानननयगाधमधि
रुगदुमिद॥मारुयिरु.रा.रु.रु.मिन्नुया
(स॥याविगाधात्रयात्रयानसंकल्प॥वर्ष
॥क.त्माधादनसकमत्स्यमासंख्यायकाय
॥नानधीसुव॥दु.पु.म.नि.म.कि.ग.गा.जन॥गमनयायक.रु॥नसंयुक्त॥व.ह.स्यारु.थ.रु॥नि.वा.गु.द.मि.ति॥

[illegible]

यथावः॥ निर्गमः॥ स्रक्तकवक्रच्छिद्यहान॥ यकत्वव
द्वदशदः॥ विष्णुः॥ अनेकयुगिर्गदः॥ भूमः॥ द्रुष्टुर्गदः॥ त
ऊयिकयुद्धगर्ज॥ आगमः॥ मृगल्लयुगिनिः॥ अचलः॥
नगदरवद्वानानमीकावः॥ सवभन्यः॥ दः॥ नायकभन
भक्तिकवद्वानायाः॥ नाशियायः॥ नगद्वक्तमीनाः
सिगावसावन्नथानकावर्धः॥ मथ्यादात्तयनिः॥

यः समस्तभूयनासित्वदावधवभाशुनर्त्तवना

नमनः कानादयस्तु यकावात्रयक॥ नाखाखयत्रस्यम् माकाङ्क्षम्॥ अकनधीयत्तविरुनाकनधीयकनक्षनम्
दनस्य॥ जीविनायवाक्ष॥ मविरुन॥ मन
भवत्तुगर्हदावनवपुक्तमिधुयस्यनम् य
ग्नः युक्तिः ॥ ४५॥ नक्षत्रधीनाम् यः योय
कस्य॥ अन्यदागान्निदानवृद्धो॥ अतिमिरुन्
रुक्मः युक्तिः ॥ ४६॥ अविनासनायानिनिमिरु
गेशानि नक्षत्रमिनिमिरुस्थायि॥ जानकमवहाकनग्ननायस्यधक्तयाम॥ वेद्यस्यवृद्धिगदिकानामजावहाक्यत्वं॥

माकाङ्क्षम् ॥ अकत्रहीयत्वीविरुनाकत्रहीयकत्रक्षनम्
 धगगः ॥ अहिदः कायगस्यस्वदम् कसमादायनानी ॥ वि
 न्कयन्कुक्कवञ्जमन्कुयथागमम् ॥ यादनस्य ॥ जना
 यक्षदीनां ॥ अन्यत्वस्यानस्तन ॥ स्त्रीयद्रवमस्तुकत्वघाः
 विद्धन्कनाजयत्रम्यां ॥ मूलमनरिसंदिगस्यमारुग
 ॥ त्वन्नाम्नामत्रक्षयकत्रहीयदामीनिवाकः ॥ अन्यघा

मनस्यस्यगनिकस्यसूनी॥दवगिदान॥कठविषय॥वाजाकृतयनमूयिगस्तुसायत्या॥वधयावाजयिककृद
कगर्ग॥निथागडयद॥निदलनमाह
स्यकावः॥नासंहिगावसम्यरु॥करुत्वी॥
सूतंमुखंनवंभरुवतिनिवृत्तंसायनिय
॥असंयथायवदार्थदान॥गणुसायनियक
पाशासकृद्वन्दादीमनस्यरुत्नस्य॥नग्न
त्यंकर्याग॥मनुवयठवृदद्याग॥यदावक्ष्यवयनादाय॥गुरुग॥मय्यववकिर्तकृत्वासा॥यत्॥नात्याः

गर्गो॥सूतमाज्जनावाग॥दकशासाध्वविकृतयित
सज्जमानकनकभेदय॥वधयावाजयिकयुद्धगर्ग
क॥अथस्वसंयादन॥मियगामिखनूयसूतनग्ननस्य
स्ययादन॥गर्गपुत्रयकचाटयीउनादीयानन॥यः
नायसरसाधमुकनकृत्वाद्यवाग॥संप्रजानवैशाय

आधिनावाचुद्धवृद्धानां वसपुष्पनाशिरुक्ष्मं॥ पूर्वजावयवस्य॥ अरावान्नवक्षयदिनकामगयाशेषज्ञान
यदानकसस्य॥ नासस्यरावागकृयसदाय
नियकतायसिभागकृय॥ मयनयिममत्व
यउत्तमयथन॥ कथीरुक्कवयत्रारुथ
सदाठरुसकवर्न॥ क्षत्रयनकृम्यर्षी॥ न
रुष्टिकादानं॥ अगकीयाकमावासमरुक्ष
नं॥ अगिमुदनं॥ अयवकृनं॥ कालवगययुरुमनमादाय॥ विधयावाकृयिकविरुक्षं॥ ॥ रुक्कृदुदनं॥ ॥

रुक्कृ॥ रुक्कृगगदयल्लयययावकिक्कदायागुदरु
नियुक्क॥ नसुकांकिथन॥ नवाटिगां सुमिगामानावा
किथिनी॥ किथनयत्रिकुगसंगगल्पादि॥ अन्नवाउवया
रुक्किथनहिक्क॥ सानाथ्मस्यसकवर्षी॥ विधमनेनं॥
कालरुक्कस्ययानकस्यवा॥ यात्रुनिर्मोदनं॥ गन्कीसुय
॥ रुक्कृदुदनं॥ ॥

२८

हा किं॥ य नायदधलमभामावि ल्ययसत्वा न हि सत्त्वा न स्वस्य॥ नायसत्वा कृ ल्य आ क र्थागि॥ य ला वि रु द्ध॥ ना स
 यनमूल न स्या कय विहा नियगि वी येन॥
 य स्या॥ स सुच न वा॥ न दृ गा क र्द ह्या जा ग ल्व
 दि कं व ज्ञा॥ ए व दि ग ध मी य रु द न ह्य क्रिया
 व न धि वा स न॥ य दि रु द क्ता॥ यि लु या न म
 हा क र्त्त य नि गृ हा ए मृ धि कं थ्या॥ रु क्ता न म
 ॥ स मा क उ ल व पु ना म॥ स मा क न या वा ऊ यी का नि॥ अ हा व व स य ॥ अ क र ल्व ग र ह त स॥ मा व न॥ उ द्ध द न॥

उ द्ध व थ्या य नं द्ध क न स ना मा ल्या रि ध न मू र्त्त॥ वि य य
 ॥ य ला ध य द्ध ग र्ग॥ स्क् ल म द क द क्ता र्थ वा दी सि वी व न
 सि स दा न्क म गु क र क्रि त हा वि ना नी ल्य क स्य द्ध र्थ र्ग
 गु हा ए य वि ष गृ हा मा स न नि षी द द र्श द कं गृ हा ए
 द र्श नि ष्ठा म नि ग ल्व स या द न॥ य ला य वि नी ग का नी

॥ अगु वरा वा लें घर्म क र्ण ग ॥ ना व म्का ग र्थ ग ॥ ना शि क्रि गः शि क्ता या जय ग ॥ नय द्वा भ म्का वा र्ण यय ग ॥
 न म्म न मे स मख म धनि नय ग ॥ धया वा
 ॥ वि नि धाय स र्म म रु व म नू ष ध न य क
 म ष्ठ न्व न्म य स क मा म य स क मा म नि स र्ध
 म या स र्ध मि त्य क ॥ द व ना ग य क्ता ग ध व कि
 या गि ना या ॥ स्फ ल कृ त्व या स धि भ व क स्य
 क म रु ना ध र्मः ॥ स्फ ल कृ त्व म्म ल क ण म रु क स्य क भ वि क र्मि तः ॥ भ म थ नि मि रु स्य ॥ ना न कि र्म द द्वा र्ण ग र्म

ऊयिकविनीतकानी॥वधयावा॥ऊयिकसमाय॥
 गावा० न॥गत्ववध्यामिमायवध्यामिमायवध्यामिमाय
 मालमिसलयामियनिसंमायसागयमयिसमायय
 ननमहावगयतयिषभचक्रकालुकठयुगनयुनि २०
 अनिस्यादिसंज्ञधनायमाधेवययुनालरिहादि
 वक्रमिहा॥धमथनिमिरुस॥नानुकिरुददुसागदुम

जग॥ ना नरु मा नु प्रयाग त्वं॥ न द न्नि निष्ठु या ग म्मां मू को स्वाद न॥ न या द्यो म र्द य वि म र्दा तां वा क ज ग म्मा॥ क र्मः
स्थ सा स्य य वि मा रू॥ शेष धन मा व न॥ य न
क निका याः भि न्द क रू ना सा म्प्री वा न्द
रू व क द्वा न्द या द ऊं घा म्पू ज्वा न्द न्द मा व
रू यी० वु मिथी धर् रू व घ ट घा टिका घ ट वि
स थ भि व॥ वृ ग्वा यी उ न॥ नी यि न न सी क रू
॥ सं का म रू वृ ना न स्या न॥ अ या नि भ व म न भि क र्व न॥ अ म्पू ज गं ध व य न॥ अ ना या रु व सि स द र्ध मः॥ य वि

ठुके स्य॥ आद्य॥ आविष्कारः सथविद्यावीजः सथक्षमीमांसाखिगानी॥ स्यलनन॥ आद्य॥ अङ्गजानस्य॥ वाद्यनाः
 विसम्बसथन॥ सिगनदीनेकाव॥ विनाः
 वसङ्गमथयनूरवेष्ट॥ अनाडीगनस्य॥
 नूरुयनूरुयाः॥ आकाशकटिवालनस्य॥ य
 अरिनिर्गमसथयनूरुवावासंयकृष्ण
 ययागः॥ दलनदकृष्ण॥ ध्वनननानुआगावा
 लकं कृयने॥ अस्त्यध्वननदृग॥ स्रवणस्रध्वयि॥ भावनविजंजं॥ ॥ अविद्यमानयुगसमननकवविद्यना

३०

अविशिष्टत्वमामलालङ्कारद्वयविकर्षादिभिरिति निरुद्धं न त्वस्य वाजनं न ब्रवीः
वदन्त इति॥ अनन्यद्वयकृतकामस्य॥ नरि
दोक्तं भवत्वा मातुर्द्विह रुग्णिनी सप्तमय
यी० वदन्त इति॥ एतच्चैव तन्मात्रं यत्तु
न॥ निर्दोषान्तरकामया भुङ्क्ते रुग्णिनी यन्निष्ठ
त्वत्तुलं॥ अनन्यद्वयकृतकामस्य॥ अन्मा
सम्प्रादन्त॥ कायसम यत्तु॥ शिक्त्यां सत्तात्कादन्ति नियुक्त्यैव त्वत्तुली॥ द० नयान्मादिना मुच्यते॥ नदा

स्रक्तं नापी दाता यत्राक्षि नित्यया ॥ याद ऊं या वा
 मा फं ॥ ॥ सुयाः कं ह त्वमिदं दसिनीष
 विरूयू वषया मादं मुवी ॥ उरु व न ह या ॥ दध
 याः ॥ गत्व वृहस्य ॥ न्य नदी या क व ऊ विकान
 ना क न म न ॥ ज स न मू रा वि न दू री वि न या
 ह मो ल स्य ॥ ज न क न ह्या न्य तु ॥ म त्वं य नि
 न कू क न व न म ना ग म प य को न नि व ॥ म नु स स्य त स्वा का वः ॥ न म न्म म नु व हः ॥ न न्य व र्द्ध स्य व वी व न स्य ॥

यद्गु त्वा यो व मु या वा ह ह ॥ भा व न वि नी न का नि ॥ भा व न स
 या ह्य न या ॥ सं रा ऊ न ता या च ॥ स द न या या ॥ अ च न
 न गृ दि ध्याः य मा सा नि ध्य वि ह स्य ॥ सा नि ध्य का नि क
 र न व ॥ वा ह त्व ग स्य ॥ वा र व ता द्वि ध्य व न सि द्म ॥ अ र्द्ध
 व र व ह नु य न्ना न गृ य नि म व ना म थ न स्य नि य नि व ल
 का य हु का नि मि ता व ॥ द द व नु य म न व य ॥ म थ न रु व
 न कू क न व न म ना ग म प य को न नि व ॥ म नु स स्य त स्वा का वः ॥ न म न्म म नु व हः ॥ न न्य व र्द्ध स्य व वी व न स्य ॥

३७

वाक्यदि॥यदिगुणिमय॥यत्तुगुनिनियममिगकदि॥यत्तुगुनिनीयवत्तुगुनिदि॥यत्तुगुनिनिमनआपननदि॥
यिथनकयमिथनमकाकिनयिथामिथक
गुनननमवेगदिर्यकिषा॥गदरास्तुयगत
यिगुयाउं॥अनागमीनयिथानिवा॥यदुः
निगकाभि॥मेथनराषर्ष॥मेथननअन
नदवययवात्रर्ष॥ननमेथननवानयस
नयानननयथमनयनगायननः॥यत्तुगुदीनदीनयसंयुथास्तुमानिवदिगवत्तुगुनननयउउकः॥यत्तु

मनस्यत्र॥विष्णुनिमयमिग ॥अन॥अनायकिः॥सुखाभ्येगन्धयकन॥गुदानेवाअनिर्जनमाजा॥दृष्टिजासंग
निषरु॥सुखाः॥सुखायनियान्॥कायसक॥
युथागत्वं॥उत्त॥कायसंमक॥मिथुनाको॥या
यागत्वं॥अविष्टिषुल्वक्याययस्यय
यलिद्वयाकनारियाययजनययनिबकी
सुल्ल॥कासिनिवाय॥यायिकासिनि॥३६
विशुक्त॥मयासार्द्धसुयिदिसमागमंवाकृतिनि॥मिथुनाराययय॥गथद्विदिकृवदधर्मिकारायय

जायांम॥ कलहदतनन॥ मया ममकां वासि यंकी धीरी रथ को॥ प्रकृतं मुनियामिनि॥ कश्चिन्नु वनिव॥ सांच विमयुद्ध
॥ हलंदन नाना मम मधनना॥ धर्मोपधिप
नृम्या नृम्या नृम्या नृम्या॥ सांच विमविनी
स्या॥ अग नृनियुक्तानियुक्त तयाः॥ स्व त्वेनि
ग॥ नाक रू त्वममना रुद स्या॥ या विमनन
॥ अने नृनय नृद या विम स्या॥ उकाथम॥
॥ १॥ अने नृनय नृद या विम स्या॥ उकाथम॥
॥ १॥ अने नृनय नृद या विम स्या॥ उकाथम॥

प्रकृतं मुनियामिनि॥ कश्चिन्नु वनिव॥ सांच विमयुद्ध
नृकानि॥ सांच विम॥ निदविमया जं त्वं विर्याय थव रुक्तः
युक्त स्या॥ यनि रुवय रथ क का व का य न वा वा वा॥ उका त्वं रु
म वा न न रुदि धन रु व रु नृद विम आ वा स म्य का व रु
ज नि य मा ने स्या॥ अका नि क ज म व रु नृम य वा रु म न नृ
॥ १॥ अने नृनय नृद या विम स्या॥ उकाथम॥

यद्यदना॥ कुन त्वमना॥ त्वममध्वरु॥ पृथक् त्वमवां क त्वगीय नायां॥ नाक ह त्वः॥ त्वमक त्वनय याग त्वं॥ न
रु ले क्त ग युगिक ह स मा क र्थ या त्र स्य सा
म न्य स्य॥ वार्क नि धि द स म डा रु ष म क
न क या क रु क्त ग॥ पृथक् त्वं क त्वदि न त्वं॥ ग
न त्व गि नी कि नि का सि॥ न गि ष क् ना य ति
न न॥ पृथक् क न्द ग य स्या स्या मा य स्य॥ क स्म
नि वा कि ना॥ सा च त्रि श वि स र्ग॥ स० त्व ग क् स त्रि य ना स व न की ज य न ग अ नां सां च त्रि श॥ अ य द ह य नि ष

यः॥ त्व त्वमना॥ त्वममध्वरु॥ पृथक् त्वमवां क त्वगीय नायां॥ नाक ह त्वः॥ त्वमक त्वनय याग त्वं॥ न
रु ले क्त ग युगिक ह स मा क र्थ या त्र स्य सा
म न्य स्य॥ वार्क नि धि द स म डा रु ष म क
न क या क रु क्त ग॥ पृथक् त्वं क त्वदि न त्वं॥ ग
न त्व गि नी कि नि का सि॥ न गि ष क् ना य ति
न न॥ पृथक् क न्द ग य स्या स्या मा य स्य॥ क स्म
नि वा कि ना॥ सा च त्रि श वि स र्ग॥ स० त्व ग क् स त्रि य ना स व न की ज य न ग अ नां सां च त्रि श॥ अ य द ह य नि ष

३३

मनिगमनस्य॥यत्थागलं प्रवृत्तं॥४

प्राच्यान्कश्यपिष्ठनवाक्षनमृणा॥अन्यथागगीयानार्धंमनसंघावसेवा॥सुनमसवर्तनेनधंसना॥अन्वद्वयव
नामः॥गथागगस्यानिकेकदुस्तुविरुद्रधिवा
दुस्तुर्ग॥अमृनिजनधिकयुक्त॥यत्रयव
नत्रयान्नगमि॥निवात्रधवर्द्धक॥उक्तक
दनत्मात्रधस्या॥अनाहूयत्वंमस्या॥नेषनाहू
दुक्तकृत्वस्यरुद्धसंघस्या॥संघरुद्धसंघाव
सेवा॥स्वयवासनाकर्तृविमथा॥मेख्याध्वनिवास्यापुत्रिदिनिविक्कृत्वस्यमृषा॥कृत्तद्रुषसंघावहावा

इयं सा नववृक्षः॥ सख्यं न धिस्मिन् गड्डध्वं न्यस्य न्यस्य धात्रे नः॥ सग्निकं॥ निर्यासं निषय न न विद्युवा सः॥ नयमी
त्यस्य ह्यस्मन् नर्न गच्छ॥ न च यद्यो रयुतिय कि
लेन॥ असंयत्तं च कुर्वे ह्यमूर्तं नासं गैवर्जः
नियतं॥ नववृक्षः॥ न न च न विगलं ग न कय
समावास स्यवर्षा न दव स्यवर्षा स हिं गा वाः
सिन्धु कठिनः संधादि विनाश विमर्शः॥ अ

मम न विद्युवा स संवर्गः॥ संधाद्या गुचक खजः कृवाधिकथाः॥ अविष्टि न ह्याल व संवर्गः कर्तुं कर्त्तुं॥ साय विद्या

निर्गिर्तुं॥ व मधवम रिय ह्यगगा का व संयत्तं न ज॥ या वि
न वज्र ग व हान॥ नानं संधादि क्रिष्ण वा वा भव स्यी मां हिनी
ह्य॥ नानया वा ग कथां मां स रिक क स क वाट क ल्व॥ सदिग
जला न विगलं ग न कय स्य ह्य ह्य ह्य व ना द रु स द रु व नाः
न्याधिष्ठान मर्गैः कवी व व रु न या क्य स रु व युति विधि॥

॥ आदिना त्वसि कृष्ण धिभी तमवव नित्य त्वस्या जसि कृ शिवा जूनः रुमः ॥ यो ववा ह्य संधाव क्षया ॥ संधाव क्षा
याः समाका ॥ ॥ नायवै क्षा नावुन न्हा
सुया जिभ क म्म स्थाया ॥ स्व त्वनेः सस्त्रिक स
वुम्मा खजया नियम नस्या ॥ सीव नाद्रि कल्पा
न्यायिषा द्द ह्म निज न त्वी ॥ सजा गी साकाः
वमावु ॥ निगह न त्व ह्म सुस्या ॥ साधिक स
व त्व ह्म न्हा न्हा ह्म द्द ह्म नावु ॥ यवाया यो ॥ वासमि ॥ जि म ह्म ल ह्म द्दियं कृ पु मा हो ॥ अस म्म ह्म धि ह्म न न ॥ सर्व

ॐ

न नञ्जालिष्ठयावगस्कुङ्गस्यसंस्तवनं॥निर्मयादधन्यशिनूगममनूयस्यैकनूयक्षमशामाः॥नसीमाः॥
न॥युथकलंकं॥नमभ्यगः॥यत्रस्या॥वि
जवधिष्ठानस्य॥नान्द्रिनेः॥जिक॥साधिक
नीः॥नान्द्रिधर्मकथाः॥दृष्टिगण्यस्यनाश
गुथाः॥वजिगल्लयगग॥संस्तजनल्लय॥ना
जिकयुक्त॥अविद्यमनेः॥सन्निकम्॥युक्तव
सल्लवाधिष्ठानिकस्य॥अन्यदास्तुतिष्ठानातिज्ञाको॥अन्यत्रकल्लविज्ञानीयस्यवक्तुदिनं॥सर्ववक्तुल्लय

वाक् स्मृनादयः सुस्ति न ह्यस्मात् ॥ कनमयिदमया स्मृनययक ॥ निकश्चयविद्यदिरुववाकत्रमयादा
 नरुहर्त्त ॥ अविशकत्तयावधनगाइसिउ
 स्मृमलस्य ॥ मुनमुलादयः ॥ ससक ॥ अस्मिन्विदु
 वः ॥ नोभकटयः ॥ निमयादिद्यावर्गयया
 गुमयावत् ॥ ययवयूकनवर्गभकटन
 यद्विद्विक्कजोउकावजसायुक्कनिकीमन्यव
 यनिकायानिषययः ॥ स्मृनिगर्भकावस्मृललासुधनावा ॥ नमस्मृननिकवणीययनिमस्ययः ॥ निनाम

यद्यपि कर्मयि चतुष्कः ॥ अग्निमधुतच्छुदित्वं शायि ॥ कायसकं भद्रयः ॥ हस्तः ॥ आकाशयनिकसतककवर्ध ॥ मासिकनेः सः
समिकाविहर्मा ॥ यद्यपि न त्वन्यत्र रुहना ॥ अयस्या
स्वयचनयनिभुवलयो रुदधविनिमिकादि
निम्नः ॥ कर्तृत्वं स्मृतं ॥ अन्तर्गतयर्धमभुसिद्ध
सायकयवर्जः ॥ संसृजसक रुतं याधभनः ॥ वृ
स्वयनधधवतद्विद्वनिषयनानां कस्यधवन
कनलकात्रितं ॥ आदत्रयर्माधक र्त्वायवर्धनद्वरुतामेकं ॥ संसृजयधननायां यथाह त्वमीह ॥ गयमीलसायथाथ त्वं

क॥ कदम्बः शोभति त्वं मया ह्येव न स्यात् ॥ पृष्ठद्वयं न तां सदा दीपयन् ॥ निषेधनं सदा ॥ यत्कुरुते न सदा ॥
 वाससाः ॥ द्विगुणं मरुतं नाना ॥ अग्निः यमः ॥
 यावदर्थः ॥ अदयं त्वमधिकस्य ॥ नैः सन्निः ॥
 ययिष्यदग्नयं सदा ॥ इति ॥ अथ मः ॥
 संवाद्यां न वयं रुतयन् ॥ विषयं यमवः ॥
 कर्त्तुं ॥ अद्वयं तु यमं तुल्यं कर्त्तुं द्वितीयं ॥ रु ॥
 विष्णुनिकानि ॥ कनिष्ठा ॥ रुयं ॥ रुदं रुमं रुयं ॥ अनं रुयं मध्यानां रुयं ॥ अरुवा ससा द्विपक्षकमपि द्वि

पुनिग्रहनेः सन्निक विरुद्धं ॥ इति ह नन्द मा ॥ यत् न नाय वि वा व ग न ग म्यादिः ॥ अथा ग तं म स नि दि म य नि षु ॥ वे भ य
म या ज्ञा वे ष त क् ॥ य ठ य दा ना यो ग न्दु ॥ अ ना य
क य य ॥ पु नि ग्र ह नेः स न्निक ॥ म नू ष्य ग नि माः
दि न न सु द ष्य क मा व सी व व स्या ॥ वि रु द्ध नः
य व रु ष म मा वि रु द्धिः ॥ अ ना य रि न र्द नो
रु ष नः स न्निक ॥ स व स्या सा ठ धि रु ष स्या वि
रु क ठ रु द म रु दं स क द्धिकः सा ठ क ॥ रि रु ष रु द य थ क पु ठ सा द्या दी नी व स न ॥ य म स्या वि रु द्ध तं ॥ अ न्य रु द स्या ॥ अ नि

लि स्ता व द कानि क वि रु द्ध न ॥ वि रु द्ध या दा ना ॥ पु नि ग्र ह नेः स न्निक
गु दि ह न ॥ य रु ष नि ना य रि रु द्ध ॥ उ रु द र्मि रु द्ध य ॥ अ ना
द रु द स्या ॥ मी न स्या ल रु ॥ वा व व स्या ॥ अ न्य न स्या ॥ य द्धि ध स्या
॥ नि रु क द्ध मि क या रु वि रु द्ध न ॥ न्य न त्व मा ज्ञा न स्या वा न त्व
रु व ना र्द तं ॥ अ स्या य रु द्ध ॥ य व गु दि ना षा य रु द्ध रु कः ॥ य
रु क ठ रु द म रु दं स क द्धिकः सा ठ क ॥ रि रु ष रु द य थ क पु ठ सा द्या दी नी व स न ॥ य म स्या वि रु द्ध तं ॥ अ न्य रु द स्या ॥ अ नि

॥सप्तनवद्विंशतिः॥सांघिकंक्रियाकात्रमन्नत्रकृत्॥अतिःसन्नममदागन्तुं॥सद्यमन्नद्वयनिर्हन्नाधमस्यभयुधः॥
नृनिनमस्य॥नवद्विंशतिः॥सद्यमन्नद्विजाल॥अद्भुतया
संघटयनिर्हन्त्याय॥न॥धपनिर्हन्त्याय॥येसु
स्यकनिककर्कसादिनाभिगधवनः॥स्ययका
मत्सुसांघिकानां॥धवननेःसमिधुय॥धवन
॥कयीद्विद्वत्साधयविवर्कं॥रुत्थनरुसि
पुद्गानसंघात॥सौजायलिकस्य॥उपसंवाद्यमानमूषिगया॥विरुधमस्यययुवमः॥स्यययिहानिद्वयकंयुक्तम॥

निःसृजमानमनिर्हकं॥याजदीवन्नसिंकासन्निगकायन्नं
नद्विकर्तृनादानं॥धवननेःसमिधुविलम्बं॥भावात्रयसाव
सः॥इत्थत्तद्विनिमिदिकाशुस्यभयन्नवैविकल्लिगनि
नेःसमिधुय॥पुलिगुदीयान्तिद्विदीदांवासः॥यदिवर्कनाय
शगावा॥युनिगुह॥विरुक्का॥दीवन्नस्य॥अनायहिद्वयक
॥

३६

अनाभकमसिन्नसाधननेकं॥ नादं सदा दृष्टं न्याय्यं॥ उक्तादिनेः समीकः॥ यवानवीव न स्यात् न पंडक नामादि॥ दि
वटनमाकाठनस्या॥ उक्तादिनेकमर्धनोः स
सस्यवाक्यकल्यस्यमुक्ते सतनव॥ यथक
सीसनासा नो॥ उमत्तवथा॥ दानयसः
स्यनमिनिकल्पा॥ नविधमानधर्माथ्यस्य
धर्माज्जत्थराजनस्य॥ ननु कत्रवायस्यका
र्यकार्क॥ निनमरायं स्यययन॥ नादस्यदायिनदालगम्॥ कनम् न्या स्या स्मेदसाग॥ उदकाधीवक कार्क॥ समानः जाल

निकृष्टा नः य मा धय विष्णु स्यात् ॥ पूनक सवयव तल्लो ॥ उरु तल्लो वधिक स्या यत् ॥ विष्णु कव विष्णु स्या यत् ॥ त
ल्लो भोला ॥ अद्या नवय स्यात् ॥ विष्णु य ना धनेः स
न ॥ तदवा न्यत् ॥ संकलित मा धनः सन्नि क
युचित मकलितं वीव न मन्त्रा य निदि स्या यत् ॥
त व्यान पूर्वकं यदयत् ॥ ना भक वरु या संय
त गजाल गी य मन्त्र स निष्ठत् ॥ अ संय लो यात्
निः सहा य स्या यत् ॥ दूरी रुग्ण नृ स्यात् ॥ युगी गृही यात् ॥ य न रा य न लु न न दू य न वा ॥ यदी नी ॥ प्र न य स्ये दू यः

अवसावनेऽसक्तिकः॥ अन्त्यनादशासाधिकसंघरकायकीसमधन्यमस्वनाउशेवर्मविभवः॥ कीलीयनकयसंघः
नवन्ध॥ पदानां विहीयनिःप्राप्तकथन॥ नमः
यदी॥ अर्त्तमयनावागयद्वादिभनर्त्त॥ अकन्रध
संघनगदर्थसंघकमिकेः॥ अग्नस्यदोनी॥
॥ यागस्य॥ अतप्रिष्ठिगस्य॥ निरुसुहृदयवशं
नननाद्यानेस्य॥ निरविकन्रकपागकसेकस
सध्ववसाना॥ नयजादसुधात्रयन॥ याचनयकमप्यराव॥ न्दिसेस्य॥ जावरुर्वननगददीनक्रमस्ययनिराग॥ यदि

न्यंकथीन॥ नगदीवर्त्तानपूदसंयुक्तिपर॥ गृहिभका
यनाधायन्मन्त्रनयययधयह॥ नवन्धकं कथीन॥
नपुष्पावृद्धवृद्धनसंघाथमृच्चरु॥ अयविकनेऽसमिक
यक्रथगायानियमने॥ अकलिकलंयादृष्टुकाधिकोर्न॥
॥ यागधनदानेऽसमिक॥ नागितायकदीन॥ नयविकन्र
नयविकन्र

नविधि॥अनकः॥कृतमयकृतानुसूतनः॥कात्रस्य॥नदीनिगलकस्यानुयाजंस्त्रीकृत्यति॥म्बीकृतस्यस्यवायः
विशगच्छेत्स्यकृतमवकयेनिशानन॥द्वयमा
वातनऊतजाननुयाधगरुमभनगल्लताः
कत्रयि॥दिनस्तिनदधुदाभयवत्रिनयावी
नरुय्यादायलिः॥गुहिलयनस्यासुनिलः
न॥नकलंययाग॥ययुऊननार्थी॥सावामिकी
स्यकात्रमासदिवभसंघस्वीवायेधिवानिकगुदीरुधनलालानायाययु॥सगवाननदिननसेपुवदययु॥नूयि

वर्णानि ॥ भर्षा मृदु मय नभं रं च काष्ठुय रुणि ॥ भर्षयथागस्तु धानि माद नं धाव नं व ज नं सक ४ म द्वा कड
यलय ४ ॥ यय म धुय वागु नां का नभं ॥ व न
दना नां ॥ उकय ला भका द नं न त्राम विष्ठा
यथा लभ धा रं या व कायथाग ४ ॥ धा त्रय द धु
भय धा ज नय लय य विष्ट सज न नाथं ला
ला व लय नं ॥ वा लुक या लभ मय न वा ॥ धा
मय व न नं ॥ स गृ रं व नु ॥ स गृ क भय व रं ॥ उ ल व रं भ कृ रं व निका या ॥ धा त्र भ मय ॥ क मि क या म न नं

यथागस्त्यधनिमोदनं धावनीं च ऊर्ध्वमक ४ मन्त्राभ्यु
 माक्राया नृदक माक्रस्य ॥ काष्ठप्रवशा ४ क्रयाक योभमर्ष
 दिनास्त्राने ॥ तनाप्यनिनिकया भकधनाचुदकदय्यपि
 या ॥ ५ द नृयवकाश्या ॥ ६ रुका मोभवस्त्यो कार्य ना
 रुक रुकस्त्यु ॥ ७ रुका ॥ ८ रुका ॥ ९ रुका ॥ १० रुका ॥ ११ रुका ॥ १२ रुका ॥ १३ रुका ॥ १४ रुका ॥ १५ रुका ॥ १६ रुका ॥ १७ रुका ॥ १८ रुका ॥ १९ रुका ॥ २० रुका ॥ २१ रुका ॥ २२ रुका ॥ २३ रुका ॥ २४ रुका ॥ २५ रुका ॥ २६ रुका ॥ २७ रुका ॥ २८ रुका ॥ २९ रुका ॥ ३० रुका ॥ ३१ रुका ॥ ३२ रुका ॥ ३३ रुका ॥ ३४ रुका ॥ ३५ रुका ॥ ३६ रुका ॥ ३७ रुका ॥ ३८ रुका ॥ ३९ रुका ॥ ४० रुका ॥ ४१ रुका ॥ ४२ रुका ॥ ४३ रुका ॥ ४४ रुका ॥ ४५ रुका ॥ ४६ रुका ॥ ४७ रुका ॥ ४८ रुका ॥ ४९ रुका ॥ ५० रुका ॥ ५१ रुका ॥ ५२ रुका ॥ ५३ रुका ॥ ५४ रुका ॥ ५५ रुका ॥ ५६ रुका ॥ ५७ रुका ॥ ५८ रुका ॥ ५९ रुका ॥ ६० रुका ॥ ६१ रुका ॥ ६२ रुका ॥ ६३ रुका ॥ ६४ रुका ॥ ६५ रुका ॥ ६६ रुका ॥ ६७ रुका ॥ ६८ रुका ॥ ६९ रुका ॥ ७० रुका ॥ ७१ रुका ॥ ७२ रुका ॥ ७३ रुका ॥ ७४ रुका ॥ ७५ रुका ॥ ७६ रुका ॥ ७७ रुका ॥ ७८ रुका ॥ ७९ रुका ॥ ८० रुका ॥ ८१ रुका ॥ ८२ रुका ॥ ८३ रुका ॥ ८४ रुका ॥ ८५ रुका ॥ ८६ रुका ॥ ८७ रुका ॥ ८८ रुका ॥ ८९ रुका ॥ ९० रुका ॥ ९१ रुका ॥ ९२ रुका ॥ ९३ रुका ॥ ९४ रुका ॥ ९५ रुका ॥ ९६ रुका ॥ ९७ रुका ॥ ९८ रुका ॥ ९९ रुका ॥ १०० रुका ॥

शुविह्वयागुदीनासुमः। उरुद्वयादा
निष्कली॥ सन्मनावस त्वय कः। त्वयनिः
संगः। उरुद्वयादा त्वय शिथुननमस्य॥ स्याक
कय॥ सम्मनन॥ रुमस्यक विष्णुमा दनाया
याजवात्रव्यामियुक्ता। शि० स्वक स्वकानिया
थमनूष्ठानी॥ वाचनायकममयनामन॥ रु
गुहानेनि॥ यधगुर्ध॥ न्वागुर्ध॥ आयावर्नगुदीस स्याक विमन॥ अदानेद्वयावर्धो नाकवर्ध्या॥ अस्यावर्धनाधि

विह्वयागुदीनासुमः। उरुद्वयादा त्वय शिथुननमस्य॥ स्याक
कय॥ सम्मनन॥ रुमस्यक विष्णुमा दनाया
याजवात्रव्यामियुक्ता। शि० स्वक स्वकानिया
थमनूष्ठानी॥ वाचनायकममयनामन॥ रु
गुहानेनि॥ यधगुर्ध॥ न्वागुर्ध॥ आयावर्नगुदीस स्याक विमन॥ अदानेद्वयावर्धो नाकवर्ध्या॥ अस्यावर्धनाधि
कात्रे॥ मलवेर्ध्या॥ यनिवर्धनं नुष्टाचुर्नन॥ सधस्यनि
त्वमन्यस्या॥ यदयवर्धक॥ यत्त्ववर्धस्वात्वेदान्॥ वाचननिः
ननावाचनसंघसा मगीवलाया॥ एषादमाचुवाचनउत्तन ७२
गुधिगुदी त्वसंघमल्लवाचनानि नव्यमिति॥ सनिषोदा
वित्रदयजुम्वर्धयानिमधुर्तयनिरागकर्मसवेदाकर्कसि

नाविद्यानकृत्तुषीप्रसागसः॥काभमनगयगास्यामनलुभानमदिगयवद्वर्धननयदुहिः॥सश्रदः
धुदशादकाकननवाकनः॥वामस्ययनि
याकृतेन॥निष्कस्यत्वयुयवद्वर्धनमनज
गाकृयाग॥शैरुत्तिकयामकनयाः॥
न॥नान्यान॥पाक्षकयटनचनपदीयन
शुकवम्बुवष्टिगययटननवानयायाः॥
याहनसयवंधीयाग॥काकृटाककृत्ताउगमखादलनयथनिधुनिवमेदग॥अष्टिगावज्जययकनः

न॥ययवदिगत्व॥चक्रवाशुद्वत्वमयकास्यशुद्धिः॥
स॥यियकत्वयटस्य॥नानिकियासंख्यामनचिन
कानीदजननंरुदया॥नेनासुहमकस्वयाकिन
नकजलनास्ययद्रादन॥यज्जववर्धविदलिकाना
कषा॥आशकृतिवाकयनम्बावाहादधिदिग॥नवान

कानिका म-क्राव्यवयनम् ॥ उयस्ययय न्यानीयायराधुं ॥ राधुगयकस्य नदन् ॥ साधिकं व्यायान ॥ नागुय
नगदनेशा नो नरुवे ॥ दाने गृहिने यापि
प्रदायात्वस्य नाकना ॥ नवस्य सिद्धवे निर्वः
मुरात्रिक यात्रि शयः ॥ उयस्ययनयानीय
क्रियय शिमविद्या नस्यया र्क्षस्य न न ॥
कवाटकटक द न ॥ वं गस्यवयविश्रभव
वा ॥ आधनक य ॥ वीकया नीयराधुमाया निशमिका धनक र्ण ॥ रावि ॥ यानियवयय ॥ नाकलिकवग

[illegible]

विभनगीवायावज्ञा ॥ अकथयथाविनिथागः ॥ नद
 लकयकानां मयनं ॥ ॥ मुनिननमः ॥ अह्ननमः
 युवावनात्रभार्थधनर्णः ॥ ननवावायनिधवजनव
 भकायनीरावयायः ॥ धनवर्नमलमः ॥ अषमः ॥ यो
 नूयकत्रवर्णः ॥ नित्रवयात्रवययसंययभलप
 अह्नदीनाययानयाः ॥ अह्नयवर्णिनात्रवर्णि ॥ यादधवनि

अनिर्दलिभयवजि नम्याचलस्य॥कायकायसंदर्भवा॥स्वादनीयराजनीयया॥कल्पिकथा॥स्वस्थनम्याव॥
उसुक्तयायकादृष्टिगतादिवचनाथगा॥स्वयंयान॥अकल्पिकथादृष्टिगता॥यायन॥सर्वविशताना॥
अयलदानं॥युद्धादिननिसनादलना॥थगया॥उसुक्तबाजदवीकुमावामास्यरटवलायने
गमजानययार्कि॥अनक्रायाययागवध
नादलनं॥विनामगजुवागिनिवद्वयय
वास॥युद्धाक्षनाकरुत्वं॥अनक्रायावध
लस्य॥दृष्टुनम्याययुक्ता॥असुक्तीकृणानामययययि॥दृष्टुनम्याव॥सुष्टिद्रयथनेयसुयदलनाथमय

इव त्रेक्षन् यन् ॥ कालन कालमय कालं पुनाम नः ॥ ध्वनं ॥ गङ्गी नो भामुनी न कुरुष्व कन नुवेरुर्दुर्कनेरु कन न
 यस्यामय निवद्धन ॥ नाना नक्षत्राणि
 निष्ठय कन नीया नामय कवाया नः ॥ स
 वा ॥ मलिया ॥ श्रीय संथा ॥ गृदि ह्य ॥ अ
 न कल्य न निषदन ॥ संराज न निषदन
 दूक न स्या सर्व स वरु ह्य ॥ अवध न वः
 ऊह्य ॥ शिने त्वं गृहीत वस्य ॥ संराज न स्तन ॥ निःशयः ॥ यव स्या ॥ उरु अस्ति यव यव नानक ॥

वायव्य दक्ष ॥ अथ ने च ॥ नदा विद्या गोधम स दत्त न ॥
 याग कज त सर्व त्वं कुरु कोदि गगं ॥ वरु ॥ यव को वन मरु
 न स्तन नाया ॥ याग त्वं जनि ना त्वं न संयुक्त ॥ यव
 ॥ स्तान न दः ॥ स्य न ॥ साव न गस्य ॥ न वरु यव मरु ॥
 स्तान न दः ॥ अथ ने च ॥ नदा विद्या गोधम स दत्त न ॥

ॐ

नामयमिजिथाथगीगुदिनाएकेरककृदस्यकारण॥एककृदकारण॥नमिन्मृणन॥भस्वधर्मसंघः
मवज्जवात्रिभधर्मकत्रभथाथगाथज
कीजया॥वत्रयत्रयावकसस्यलार्थमेका
न्यवभगासुस्यसुस्य॥स्वयनिशागभावा॥
निष्कर्षभमत्रसमावर्तननिष्कर्षलघु॥
वर्त॥लिङ्गधधकमलिदुनुस्यमनयान
योलाकवस्यववत्रकदलभयीन्॥मूलाभान्यमनायसुनवभगा॥प्रायश्चित्तिकमजुयक॥जुल्लमनियव

याजत्रज्जकजभधममयाधिसुनैभजधिमिष्टुर्द्विर्व॥
दिकत्रभस्वध॥अग्निना॥अनधिष्ठितसमयस्य॥अग्नाः
पुष्टलननिर्वायनेस्यस्मास्यभुवनसमवधानयक
अन्यस्येकत्रनीयत्रस्यस्यधिसुनमवाधिसुन॥अग्नि
स्यपुत्यद्वात्राथयावावि॥कृदपुत्यद्वात्र॥नावलेम
यायश्चित्तिकमजुयक॥जुल्लमनियव

विवा ना नागिक भद्र विवि विनि मोलानि ॥ न्यून त्व मनश्च न त्व ॥ न द ह्य ध्व क कूट नाव क वरु क म्भी यून व
युद्धादिक र्या न ॥ का न य लि ना क न ना ॥ य
त्रि ४ मृष्टि स न्व र्थ न क न विद न न ४ य
उरु नेषु व शि य ॥ सृ को ॥ यु नि नि पा स्य ॥
अथ दान द दान ॥ न रि को र म्या वि क न्य
न ॥ या ना जि क र्से द्या व र्ण य न र्क य म्य
भर्ता यु नि द्या द न ॥ अ न्क स्या ना दु स्या ॥ पा ग न्क र्ण ॥ अ न्क स्या न्क व र्ण ॥ अ न्क स्या न्क व र्ण ॥ अ न्क स्या न्क व र्ण ॥

आर्जुन पुत्र नृप ४ ॥ ॥ क न्क व र्ण न य ॥ का य न
य म्भु स र्थ य र्ण नि का रि ४ यु क्ते ॥ रि का ४ ॥ य न्क स्य ॥
अ नि या न्क र्ण ॥ न्क य द र्क य न्क य द र्क य न्क ॥ न क
तु वा ॥ य द र्क य ॥ य स्या ना व र्ण न ॥ य द र्क य ॥ अ व र्ण न
न द्या ॥ अ म ल पु न्क व र्ण न ना य स र्क स र्क स र्क स र्क स

५२

[illegible]

काशान्प्रमत्तं नाना ॥ अनयस्तु स्यात्तनसाहसं मग्न
 निधीयते मध्यनिष्ठं गच्छति ॥ तथा स्यात्तयि ॥ अ
 नसाहं मानस्य गदयस्तु चिन्तय ॥ अमानं नाना ॥ ४५
 शिवा ॥ ४॥ अगच्छति त्रिर्वा मनस्ययत्नस्य ॥ उयग्नो य
 मानस्य ॥ नाहं मस्यवस्तुत्वं ॥ अकार्यत्वं यत्तु यत्नः
 अमनं नयत्तु यत्न ॥ निजाय पोषधनिष्ठमना
 त्सान्कालं दद्यात्तु नाना ॥ पुनस्तु स्यात्तयि ॥

॥युथर्क्षं वाङ् ॥ यद्वयं दध्वात्तुमिन्नत्तु कृतस्य ॥ ज्ञातानां व ॥ समवधाननिष्कर्षे ॥ अगुनानां नस्याप्रकः
नवर्तु ॥ कथं नामादिनखखटर्षिहा गक
नत्वं कृतयतिवादिनमगमत्रयर्थे नः ॥ न
नाकवसाव गङ्गुडा नस्यानन्तु नस्या ॥ ३
॥ अदन्तद्विदुः कृतकृत्यमपि ननु मत्तानाः
तयनन्तु नय रत्नत्वं ॥ सवत्तु साकथेन
थर्क्षं स्वरावगनव न्वननवधत्तु नस्यायवा नस्यायि ॥ नद्विदुः किनत्वं लिङ्ग ॥ अयत्तु ॥ गुकत्वं वस्वमि

वाकविनक मरु मावतिल गोलमधुसर्पिं घामवन्त
रुत्तत्वं सवद्वस्यदात्रया लायवानस्य गमत्र ह नस्या ॥ य
नमायवा नायत्र स्यात्तयमाजान्युधमरु नाधुसि नस्या
सगदना नाकी सस्र स्र ॥ अधना नुक् कृत स्याय घनि
संवा नस्या निन्न न गमना न् नत्वं ददन स्येकत्वं ॥ युः
नद्विदुः किनत्वं लिङ्ग ॥ अयत्तु ॥ गुकत्वं वस्वमि

५३

दभवनयययक रं दुष्टिगर्गयथमाकमवात्र नाक नादि नीयगियगिययनद नमुशेरिक भाधवयय ॥ नात्रगा
वगुत्रकय ॥ नासिगनायधिमल्लदगस्य
स्यस्ववासुस ॥ अत्रन ॥ यात्रवधकसुवे
निकायाकनीयस्ययून ॥ कस्यनीयत्व ॥ ना
निकस्य ॥ रजगविसात्रास्य नदयुगिसिद्धि
स्य ॥ मसायकेशिकभमर्गवे ॥ एक खवृद्धा
यत्रन ॥ याद स्यवृद्ध मर ॥ अत्राकाभदयनिमदिन ॥ युधकाभननधमोच्चिबदभन्यवाहनानिह्यनामन

॥ नासिगसंगद ॥ नात्यागविकभवत्तनयनयत्रक
कायाववडकायववनानायावत्रभाधोयनिराग ॥ न
धिनुम्यगदिन ॥ नमदात्रभ्रत्रकयावृमिरजग ॥ नम
नस्यकायायन ॥ साधनगंत्वमधनिवाविगयावत्रन
कायात्रस्ययावमसावनमयत्रिदार्न ॥ नात्रवच्चिन्नम

वि॥ जयमस्तु नमस्तु ॥ ॥ न धर्मं रगवता धर्मं धर्मिणो जानामि यथा अर्थं जानामि यथा धर्मो उक्तः
 मवता गयति मवता माना तमन्नायाय
 यद्भवन्नन॥ इष्टु गतान् मन् ॥ ॥ ॥ न धर्म
 न॥ यत्रियुक्तिकाया ॥ सन्निवृत्त्या ॥ अ
 वसन्ता ॥ उयस्तु नन्वीकृ मो॥ अमन्त्रवस
 न्ना इष्टिवचनगणनात्थन॥ उक्तं द्विस्तान्
 त्वाभयम् ॥ इष्टिवचनधर्ममन्त्रमन्त्रनियुक्तं जालवचनगनीयस्य नृदस्य सङ्कमरुक्तिः ॥ कृतानि ॥ सृज

धर्म्मिन्माजानामियथाश्रये आश्रयेति काधर्म्मोऽकार
 ह्यादियवृत्तिवचनं आश्रयान्माह ॥ जीगृह्यमन्यनं
 वादिनोऽनाक्रियस्यायमिदं न नायाशिकाः ॥ उक्तं य
 न्मासत्याः ॥ अत्रवादस्याः ॥ आविष्कृतं गृह्ये ॥ अ
 दम्बं ॥ अत्र नोक्तं ॥ अत्राश्रयवासस्य न ॥ अत्राश्रय
 वृत्तिः ॥ अत्राश्रयवचनं नान्यथा ॥ अत्राश्रय

वि२

शिका नमः॥ अत्र कव क्वाय रागः ४ सुष्टि स्यात् नयाः ॥ कह न न मर्त्य ॥ नर्म मर्त्य ॥ गन्तु म न स ग म मा व च न रं रा धु
व ग न्न वा व च न ॥ या क था ग व ल म य या ग
उ या वि ना गं ल स वि दा न ग व य वा न गः
मं क मि स्य न वा सु ना य उ व रु रु के वा य
न ॥ अ ना ग मे स्या द सा धि क ग के उ य नि
य रु म् वा च स य या ले वि स गाय य किः
म्य ग रु द नू र न ना या नि रु न द डुः ॥ वृद्धि रु द न य द न द व न व र्ज म न्य स य द स्या रिः य वि या लि न मिः

उं